बाबा मुक्तानन्द के साथ एक प्रसंग

स्वामी वासुदेवानन्द

१९७० के दशक के मध्य, जब बाबा जी अपनी दूसरी विश्वयात्रा के दौरान अमरीका आए, तब मैं भी उन हज़ारों युवाओं में से था जो उनकी ओर आकृष्ट हुए थे। सद्गुरु कौन होते हैं, इस बात की उस समय हममें से बहुत-से युवाओं को बहुत कम समझ थी और इस बारे में हमारे अनेक पूर्वाग्रह भी थे। बाबा जी ने ही हमें अनेक तरीक़ों से सिखाया कि ऐसे आध्यात्मिक गुरु से कैसे सीखना चाहिए और उनकी सेवा कैसे करनी चाहिए।

६ अक्टूबर, १९७४ को मैंने बाबा जी के साथ हुए सत्संग में पहली बार भाग लिया जब वे न्यूयॉर्क शहर आए थे और तत्पश्चात् उसी सप्ताहान्त पर मैं पूर्वी तटवर्ती क्षेत्र में आयोजित पहले शक्तिपात ध्यान-शिविर में भाग ले सका। फिर बाबा जी अपनी यात्रा पर आगे अन्य शहरों की ओर चले गए, और मैं न्यूयॉर्क शहर में ही शिक्षक के रूप में अपना काम करता रहा। मेरे हृदय में सतत यह ललक रहती कि कब वह समय आएगा जब मैं फिर से बाबा जी के सान्निध्य में रह पाऊँगा।

एक दिन शाम को जब मैं ध्यान कर रहा था, तब मुझे एक दृष्टान्त हुआ। मैंने देखा कि बाबा जी नीले प्रकाशयुक्त एक बहुत सुन्दर बुलबुले के अन्दर खड़े हैं। किसी तरह मैं उस बुलबुले के अन्दर प्रवेश कर पाया और मैंने अपना सिर बाबा जी के चरणों में रख दिया। वह दृष्टान्त क्षणांश भर के लिए ही रहा, फिर भी उससे मुझे इतनी गहन शान्ति की अनुभूति हुई कि उसके बाद मुझमें यह गहरी ललक जगी कि बाबा जी जहाँ भी हों, वहाँ जाकर मैं उस दृष्टान्त को प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करूँ।

आख़िरकार, १९७५ के ग्रीष्म में, मैं कैलिफ़ोर्निया स्थित ओकलैण्ड जाकर वहाँ के सिद्धयोग आश्रम में सेवा अर्पित कर पाया जिसकी स्थापना बाबा जी ने उसी वर्ष की थी। आश्रम पहुँचने के बाद से ही, मैं हर समय उस अवसर की तलाश में रहता जब मैं बाबा जी के चरणों में अपना सिर रख सकूँ।

मैंने भारत के सन्त-कवियों के भजन सुने थे जिनमें श्रीगुरु के चरणों में अपना सिर रखने के विषय में उल्लेख था। किन्तु यह कोई ऐसी चीज़ नहीं थी कि बस बाबा जी के पास गए और उनके चरणों में अपना सिर रख दिया। अतः मैं समझ नहीं पा रहा था कि मैं यह अवसर कैसे प्राप्त करूँ। उस दौरान, मैं बाबा जी के साथ होने वाले सत्संगों और नामसंकीर्तन कार्यक्रमों में, यथासम्भव हॉल के उस मार्ग के

बिलकुल निकट बैठने का प्रयास करता जिससे होकर बाबा अपने आसन तक जाते थे। और फिर जब बाबा जी हॉल में प्रवेश करते या वहाँ से प्रस्थान करते तो जिस जगह पर अभी-अभी उनके चरणों ने स्पर्श किया होता, वहाँ मैं अपना सिर रख देता। ऐसा कर पाने के इतना क़रीब तो मैं आ ही गया था।

फिर एक दिन शाम को, बाबा जी के हॉल से प्रस्थान करते समय जहाँ उनके चरणों का स्पर्श होते मैंने देखा था, उसी जगह जब मैंने अपना सिर रखा, तब आस-पास के लोग हँसने लगे। मैंने तुरन्त ऊपर देखा। बाबा जी ठीक मेरे सामने खड़े थे। वे आगे जाकर फिर वापस आ गए थे; अपनी कमर पर हाथ रखे, नटखट-सी दृष्टि से हँसकर मेरी तरफ़ देखते हुए वे वहाँ खड़े थे। मैंने सोचा, "यही मौक़ा है!" पर जैसे ही मैं उनके चरणों पर अपना सिर रखने के लिए आगे बढ़ा, वे तुरन्त ही मुड़े और वहाँ से चले गए।

मैं जानता था कि मैं मूर्ख-सा लग रहा हूँ, फिर भी, यह जानकर मुझे सान्त्वना मिली कि बाबा जी मेरी ललक को जानते हैं।

कुछ दिन बाद, बाबा जी के साथ श्रीगुरुगीता पाठ में, संयोग से मुझे उनके आसन के बहुत निकट बैठने की जगह मिली। कुछ ही श्लोक हुए होंगे कि मुझे महसूस होने लगा कि मैं बड़ी प्रबलता से अपने अन्तर की ओर खिंच रहा हूँ। मैंने अपने आपको रोकने का पूरा प्रयत्न किया, क्योंकि बाबा जी ने हमें स्पष्ट बताया था कि स्वाध्याय के समय हमें इस पर पूरी तरह से ध्यान देना है और एकाग्र रहना है। लेकिन, उस सुबह, मैं अपने आपको सजग नहीं रख पा रहा था। वहीं, बाबा जी के ठीक सामने बैठे-बैठे मेरा सिर नीचे को झुक गया और फिर मुझे नहीं मालूम मैं कहाँ चला गया।

कई श्लोक होने के पश्चात् मेरी आँखें खुलीं। तब मैं चेतना की ऐसी स्थिति में था जिसका मैंने पहले कभी अनुभव नहीं किया था — पूर्ण स्थिरता व स्पष्टता की स्थिति। मेरा मन पूर्णतः स्पष्ट व शान्त था। मैंने बाबा जी की ओर देखा, वे सीधे मेरी ही तरफ़ देख रहे थे। जब मेरी दृष्टि उनकी दृष्टि से मिली, मेरे मन में धीरे-से एक विचार आया, "बाबा जी यही है, यह स्थिति ही है आपके चरणों में सिर रख देना।" और बाबा जी ने स्वीकृति में अपना सिर हिलाया।

मुझे यह समझ मिली कि स्पष्टता की यह स्थिति जो उस दिन बाबा जी ने मुझे प्रदान की थी, उसे मैं पुनः-पुनः अनुभव कर सकता हूँ, और यह भी, कि इस प्रकार मैं अपने श्रीगुरु के चरणों में अपना सिर रख सकूँगा, चाहे मैं विश्व में कहीं भी रहूँ।

© २०१८ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।